

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 5, जॉन कैल्विन

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, जॉन कैल्विन पर सत्र 5 में हैं।

मूल रूप से, चर्चा पाठ्य-पुस्तकों पर केंद्रित होनी चाहिए। अब, हम व्याख्याताओं से प्रश्न पूछ सकते हैं, लेकिन हम वास्तव में उन्हें पाठ्यपुस्तकों पर केंद्रित करना चाहते हैं और सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम उन पाठ्यपुस्तकों से वह सब कुछ प्राप्त कर रहे हैं जो हमें मिलना चाहिए, ठीक है? तो आप अपने पाठ्य-पुस्तकों को उन शुक्रवार के सत्रों में लाना चाहते हैं।

तो, अगले सप्ताह हम यही करेंगे। बुधवार को आप मुझे तीन प्रश्न देंगे, और शुक्रवार को हम शेर की मांद में वापस आ जाएंगे। अगले सप्ताह अंतर यह है कि मैं अगले सप्ताह परीक्षा भी अपने साथ लाऊंगा क्योंकि परीक्षा से पहले यह आखिरी दिन है जब हम एक साथ होंगे, जो सोमवार को है।

इसलिए, मैं अपने साथ परीक्षा लेकर जा रहा हूँ, और मैं यह सुनिश्चित करने जा रहा हूँ कि आप उस परीक्षा से अपने सभी आधारों को कवर कर लें। सुनिश्चित करें कि शायद कुछ प्रश्न ऐसे हों जो आपको पूछने चाहिए थे, और आपने नहीं पूछे, और मैं आपकी मदद करने के लिए वहाँ हूँ। इसलिए, अगर मैं कुछ ऐसा कहता हूँ, कि आप इसे अपने जीवनकाल में फिर से देख सकते हैं, तो आपको इसे एक संकेत के रूप में लेना चाहिए।

इसका मतलब है कि यह परीक्षा पर है। इसलिए, मैं यहाँ यथासंभव मदद देने के लिए हूँ। हम व्याख्यानों में ठीक उसी जगह पर हैं जहाँ हमें होना चाहिए, इसलिए हम इस पर प्रसन्न हैं।

ठीक है, आइए प्रार्थना करें, और फिर हम शुरू करेंगे।

हमारे दयालु प्रभु, हम सप्ताह की शुरुआत में रुकते हैं और अपने दिल, अपने दिमाग और अपना ध्यान आपकी ओर मोड़ते हैं, सभी अच्छी चीजों के दाता और जिसने हमें छात्रों के रूप में यह बुलावा दिया है। और हम लगातार प्रार्थना करते हैं कि हम उस बुलावे में मेहनती रहें क्योंकि इससे आपको और हमें भी सम्मान मिलता है।

इसलिए, हम आपको आपके लिए धन्यवाद देते हैं, और हम आपको मसीह में आपके पूर्ण और संपूर्ण प्रकटीकरण के लिए धन्यवाद देते हैं, जो पवित्र आत्मा और शास्त्रों के माध्यम से आपके लिए सेवा की गई। हम इसके लिए आभारी हैं। और हम आपको उन लोगों के लिए भी धन्यवाद देते हैं जो परमेश्वर के राज्य के प्रति, कलीसिया के प्रति, सुसमाचार की घोषणा के प्रति वफादार थे।

कभी-कभी, जब हम बहुत कष्ट में होते हैं, तो हम जॉन कैल्विन के बारे में सोचते हैं, और हम आपको उनके जीवन और उनकी सेवा के लिए धन्यवाद देते हैं। और हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे साथ रहें जब हम उनके जीवन और सेवा का अध्ययन करेंगे और उस समय को समझने की कोशिश करेंगे जिसमें वे रहते थे और जो उन्होंने कहा वह कहना इतना महत्वपूर्ण क्यों था। इसलिए, हम उन लोगों का धन्यवाद करते हैं जिनके कंधों पर आज हम खड़े हैं।

इसलिए, एक दूसरे के लिए, इस आने वाले सप्ताह के लिए, हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे जीवन में अनुग्रह के सभी प्रमाण हों, हमारे व्यक्तिगत जीवन में और हमारे सामूहिक जीवन में भी। हम प्रार्थना करते हैं कि आप बुधवार और शुक्रवार को इन छात्रों के साथ इस कक्षा के बिना लेकिन अन्य जिम्मेदारियों के साथ होंगे और आपकी कृपा से यह उनके लिए एक अच्छा सप्ताह होगा। इसलिए, हम ये बातें हमारे प्रभु मसीह के नाम पर खुशी से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

ठीक है। खैर, यह व्याख्यान दो है, जॉन कैल्विन का धर्मशास्त्र।

बस एक तरह से याद दिलाने के लिए, सोमवार की सुबह, मुझे लगता है कि सोमवार की सुबह शुरू करना मुश्किल है, लेकिन एक तरह से याद दिलाने के लिए, हमने उनके जीवन से शुरुआत की, कैल्विन के जीवन के कुछ मुख्य अंश। मैं पाठ्यक्रम में शायद चार या पाँच महत्वपूर्ण लोगों के साथ ऐसा करता हूँ ताकि उन्हें उनके संदर्भ में, उनके समय में, और इसी तरह से रखा जा सके। आपकी पाठ्यपुस्तक भी कुछ ऐसा ही करती है, इसलिए यह आपके लिए मददगार है।

और फिर हमने उनके काम के बारे में बात की। जब वे अपने मंत्रालय में थे, तब वे क्या करते थे? और हमने उनके काम के बारे में तीन या चार बातें बताईं। एक, हमने बताया कि वे एक तरह के लोकपाल थे, अलग-अलग दृष्टिकोणों के बीच मध्यस्थ, खास तौर पर सुधार के बीच, बीच में खड़े थे।

उनमें लूथर जैसा स्वभाव नहीं था, जो बहुत अमीर था। लूथर संगठित नहीं था, और वह एक योद्धा और लड़ाकू था। कैल्विन ऐसा नहीं था; वह मध्यस्थ की भूमिका में अधिक था। हमने यह भी उल्लेख किया कि उसने जिनेवा को ईश्वर के शहर के रूप में उपयोग करने की कोशिश की, सुधार के लिए एक अनुकरणीय शहर।

उन्होंने जिनेवा अकादमी की स्थापना की। मुझे लगता है कि यह आपके नोट्स में है। मुझे उम्मीद है कि यह होगा, लेकिन उन्होंने जिनेवा अकादमी की स्थापना की, और यहीं पर लोग आकर धर्मशास्त्र और सुधार के मूल विचारों का अध्ययन करते थे, जिसे वे अपने घर वापस ले जाने में सक्षम थे।

सिस्टमेटाइज़र शब्द पसंद नहीं है। मुझे नहीं लगता कि इस शब्द में कुछ गलत है।

मुझे लगता है कि वह एक अच्छे व्यवस्थितकर्ता, धर्मशास्त्र के अच्छे आयोजक थे। इसलिए उन्होंने लूथर जैसे लोगों से जो सीखा, जो एक संगठित व्यवस्थितकर्ता नहीं थे, उसे लिया और उसे क्रम में रखा। वह हमें बताता है कि संस्थाएँ एक व्यवस्थित लेखा हैं।

इसलिए उन्होंने ऐसा किया। वह हमें धर्मशास्त्र के सिद्धांतों को समझने में भी मदद करते हैं, खास तौर पर धर्मशास्त्र को कैसे व्यवस्थित किया जाए और धर्मशास्त्र के बारे में कैसे जाना जाए। किसी दिन, हम संस्थानों को लाएंगे और संस्थानों की शुरुआत से ही पढ़ेंगे।

हमारे पास जो भी ज्ञान है, यानी सच्चा और ठोस ज्ञान, वह ईश्वर और खुद के ज्ञान से शुरू होता है। इसी तरह उन्होंने धर्मशास्त्र को विधिवत तरीके से आगे बढ़ाने का फैसला किया। हम ईश्वर के बारे में जानते हैं, हम खुद के बारे में जानते हैं, और फिर बाकी किताब ईश्वर और खुद के उस ज्ञान को उजागर करने की कोशिश करती है।

तो यह निश्चित रूप से उनके काम के बारे में सच था। ठीक है। अब, क्या इस बारे में, उनके जीवन, उनके काम के बारे में कोई सवाल है? क्या हम सब इसके लिए तैयार हैं? ठीक है।

अब हम उनके धर्मशास्त्र पर जाएंगे। और उनके धर्मशास्त्र के साथ, हम जो करने जा रहे हैं वह उनके धर्मशास्त्र के पाँच तत्वों को चुनने का प्रयास करना है जो रोमन कैथोलिक चर्च और मध्ययुगीन कैथोलिक धर्म का सामना करने में बहुत महत्वपूर्ण थे। तो सबसे पहले, आप देख सकते हैं कि यदि आप पृष्ठ 12 पर रूपरेखा का उपयोग कर रहे हैं, तो हम पहले एक परिचय देने जा रहे हैं।

फिर, दो से छह जॉन कैल्विन के लिए पाँच धार्मिक क्षेत्र होंगे। तो चलिए एक परिचय देते हैं। वास्तव में, परिचय के तौर पर मुझे कुछ बातें कहने की ज़रूरत है।

तो, अगर आप इस पर मेरा साथ देंगे। ठीक है। सबसे पहले परिचय के तौर पर, सुधार की चार बहुत अलग शाखाएँ हैं।

और हम बस यह देखना चाहते हैं कि वह इस सब में कहाँ फिट बैठता है। तो, सुधार की लूथरन शाखा है। हम उसके बारे में ज़्यादा बात नहीं करते।

हमने लूथर का थोड़ा सा ज़िक्र किया है, लेकिन वह सुधार की शुरुआती शाखा है। सुधार की कैल्विनिस्ट शाखा है, जो इस कोर्स में हमारी रुचि जगाने वाली है। हम उनके धर्मशास्त्र के बारे में बात करेंगे।

हेनरी अष्टम जैसे लोगों के नेतृत्व में अंग्रेजी सुधार हुआ। यहीं से इसकी शुरुआत हुई। और हम वास्तव में अंग्रेजी सुधार पर व्याख्यान देने जा रहे हैं और यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि वहाँ क्या चल रहा था।

चौथा, सुधार का एनाबैप्टिस्ट विंग है, जिसे सुधार का बायाँ विंग या सुधार का कट्टरपंथी विंग कहा जाता है। हम इसका संदर्भ देते हैं। हम इस कोर्स में एनाबैप्टिस्ट इतिहास देने में ज़्यादा समय नहीं लगाते, लेकिन हम इसका संदर्भ देते हैं।

निश्चित रूप से, आपकी पाठ्यपुस्तकों में भी इसका उल्लेख है। लेकिन ये चार अलग-अलग सुधार शाखाएँ हैं जिन्हें हम याद रखना चाहते हैं। ठीक है, अब अगली बात जो मैं परिचय के रूप में करना चाहूँगा वह यह है कि मैं जॉन कैल्विन पर पड़ने वाले प्रभावों को देखना चाहूँगा।

किस बात ने उन्हें प्रभावित किया? किस बात ने उन्हें उनके धर्मशास्त्र की दिशा में आगे बढ़ाया? और यह किसी महत्व के क्रम में नहीं है। यह बस वैसा ही है जैसा कि वे दिमाग में आते हैं। ठीक है, पहली चीज जिसने उन्हें प्रेरित किया और उन्हें प्रेरित किया वह दर्शन की एक शाखा थी जिसे नाममात्रवाद के रूप में जाना जाता है।

अब, इस कोर्स में हम जो कुछ करना चाहते हैं, वह है खुद से यह पूछना कि दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र का क्या संबंध है? वे एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं? वे एक दूसरे से कैसे बात करते हैं? या दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र के बीच कोई संबंध है? शायद दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र को अलग-अलग देखा जाना चाहिए। हालाँकि, जॉन कैल्विन दर्शनशास्त्र और नाममात्रवाद के बारे में बहुत जानकार थे। ठीक है, अब हम अपने अगले 16, 15, 14 सप्ताह नाममात्रवाद पर बिता सकते हैं।

नामवाद बहुत जटिल है। तो मूल रूप से, नामवाद एक दार्शनिक आंदोलन था जिसे आधुनिक तरीका कहा जाता था, जो एक तरह से प्लेटो जैसे लोगों द्वारा विकसित यथार्थवाद के विपरीत था। नामवाद एक दार्शनिक आंदोलन था जिसने वास्तव में विज्ञान के लिए दार्शनिक रूप से मार्ग प्रशस्त किया, इसमें कोई संदेह नहीं है।

अब, नाममात्रवाद के बारे में एक बात जो हमें दिलचस्प लगती है, वह यह है कि नाममात्रवादी जो धर्मशास्त्रीय रूप से इच्छुक थे, वे ईश्वर की संप्रभु इच्छा के बारे में बात करते थे। और वे ईश्वर की संप्रभु इच्छा के बारे में इस तरह बात करते थे जैसे कि वह अपने आप में पूर्ण हो। ईश्वर की एक पूर्ण संप्रभु इच्छा थी।

और यह ईश्वर के बारे में एक कठोर दृष्टिकोण था, ऐसा कैल्विन को लगा। वह नाममात्रवाद से प्रभावित था, लेकिन कैल्विन ने कहा, आप जानते हैं, ईश्वर की समझ को वास्तव में ईश्वर के न्याय और ईश्वर की बुद्धि और ईश्वर के प्रेम द्वारा थोड़ा सा मध्यस्थता की जानी चाहिए। ईश्वर मनमाने ढंग से संप्रभु नहीं है।

और ऐसे नाममात्रवादी भी थे जिन्होंने कहा कि ईश्वर सर्वोच्च है और इसमें मनमानी है, जिसे हम कभी नहीं समझ सकते, इसलिए हमें कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। कैल्विन ने इसे बिल्कुल भी नहीं माना। कैल्विन ने कहा कि आप ईश्वर की सर्वोच्च इच्छा को कभी नहीं समझ पाएंगे यदि आप यह नहीं समझते कि यह उसकी बुद्धि, उसके प्रेम, उसकी कृपा और उसके न्याय के माध्यम से कैसे काम करती है।

कैल्विन ने नाममात्रवाद में एक तरह का संशोधन किया है। लेकिन वह निश्चित रूप से नाममात्रवाद से प्रभावित था, दर्शन से प्रभावित था, और अपने धर्मशास्त्र को आकार देने में दर्शन का उपयोग करने के लिए तैयार था। लेकिन ऐसे समय भी आए जब उसे कहना पड़ा, यहाँ मैं अन्य नाममात्रवादियों से अलग खड़ा हूँ जो धर्मशास्त्री हैं।

मुझे लगता है कि उन्होंने ईश्वर की संप्रभु इच्छा के बारे में बात करना गलत समझा है, जैसे कि ईश्वर की संप्रभु इच्छा किसी तरह की पूर्ण संप्रभु इच्छा हो। ठीक है, तो नाममात्रवाद एक प्रभाव है, ठीक है? दूसरा प्रभाव उनकी फ्रांसीसी पृष्ठभूमि के कारण था। उनके लेखन में एक सटीकता थी जो आपको लूथर में नहीं मिलती, उदाहरण के लिए।

जॉन कैल्विन में विचारों की स्पष्टता थी, और अभिव्यक्ति की स्पष्टता थी जो आपको मार्टिन लूथर में नहीं मिलती। क्या आप में से कोई भी भाषाविद् है? मैं निश्चित रूप से नहीं हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि जब आप फ्रेंच पढ़ते हैं, तो इसमें जर्मन पढ़ने की तुलना में अधिक स्पष्टता होती है, खासकर जब आप जर्मन धर्मशास्त्रियों को पढ़ रहे हों।

जब आप जर्मन धर्मशास्त्रियों को पढ़ते हैं, तो कभी-कभी आप एक पृष्ठ से शुरू करते हैं, और एक पृष्ठ बाद में भी आप एक वाक्य ही पढ़ रहे होते हैं। यह जटिल और जटिल हो सकता है। लेकिन कैल्विन की भाषा में स्पष्टता है, और लूथर की भाषा में नहीं थी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो यह नंबर दो है। ठीक है, नंबर तीन। नंबर तीन यह है कि वह निस्संदेह मानवतावाद से प्रभावित है।

अब, आइए उस मध्ययुगीन दुनिया में मानवतावाद को परिभाषित करें। याद रखें कि मानव... यह जरूरी नहीं कि एक बुरा शब्द हो। मानवतावाद एक तरह से यूनानियों और रोमनों, और ग्रीक और रोमन विचारों, और ग्रीक और रोमन दार्शनिकों, और ग्रीक और रोमन लेखकों, और इसी तरह की अन्य चीजों का पुनर्मूल्यांकन, पुनर्समझ था।

इसलिए, मानवतावाद एक तरह से इसे लाने की कोशिश कर रहा था... उस अर्थ में एक पुनर्समझ, एक पुनर्व्यवस्था और एक पुनर्मूल्यांकन। और एक अर्थ में, आप कह सकते हैं कि कैल्विन की संस्कृति मानवतावाद की संस्कृति थी। उन्होंने निश्चित रूप से उन विश्वविद्यालयों में मानवतावाद सीखा जहाँ वे गए और जहाँ उन्होंने अध्ययन किया, और इस बारे में कोई संदेह नहीं है।

तो अब, हम मानवतावाद के साथ जो बात ध्यान में रखना चाहते हैं, वह यह है कि कैल्विन ने संस्कृति और चर्च को अनिवार्य रूप से विरोधाभासी नहीं माना। इसलिए, संस्कृति से सीखने के लिए कुछ चीजें हैं। ऐसी चीजें हैं जो चर्च संस्कृति से सीख सकता है।

अगर चर्च वाकई संस्कृति से बात करना चाहता है, तो ऐसी कई चीजें हैं जो वह संस्कृति से सीख सकता है। संस्कृति के साथ बातचीत हो सकती है। उन्होंने संस्कृति में कमियों को पहचाना।

अगर कोई संस्कृति ईश्वर या मसीह या चर्च के संदर्भ के बिना आकार लेने की कोशिश कर रही है, तो वह मानवतावाद और संस्कृति में कमियों को पहचानता है। लेकिन वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने कहा कि संस्कृति पूरी तरह से गिर चुकी है, चर्च पूरी तरह से अच्छा है, संस्कृति पूरी तरह से गिर चुकी है, और इन दोनों को एक दूसरे से बात नहीं करनी चाहिए। इसलिए हमें इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

उन्होंने मानवतावाद से बहुत कुछ सीखा है। उन्हें यूनानियों और रोमनों के बारे में बहुत जानकारी है। तो यह नंबर तीन है।

ठीक है, हमने दूसरे दिन नंबर चार का उल्लेख किया था, लेकिन मैं इसे यहाँ केवल इसलिए उल्लेख करूँगा क्योंकि उन पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में, विशेष रूप से उनके धर्मशास्त्र को लिखने में, उन्हें कानून में प्रशिक्षित किया गया था। वह एक वकील की तरह बहस करते हैं। सुसमाचार के लिए उनके पास बहुत ही सावधानीपूर्वक, जानबूझकर, सटीक तर्क है।

और मैं आपको बता दूँ कि कैल्विन के साथ बहस करना बहुत मुश्किल है। चाहे आप उससे सहमत हों या नहीं, उसके तर्क कई बार कानूनी रूप से मज़बूत होते हैं। तो यह नंबर चार है।

पांचवां, निश्चित रूप से, सुधारवाद होगा, जो सुधारवाद से बहुत प्रभावित था। और हमने उल्लेख किया कि जब वह पेरिस में अध्ययन करने गया, तो सबसे पहले वह जिस व्यक्ति को पढ़ रहा था, वह लूथर था। और मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई संदेह है कि लूथर कैल्विन के धर्म परिवर्तन के लिए आंशिक रूप से भी जिम्मेदार था।

वह लूथर से बहुत प्रभावित थे और रिफॉर्मेशन में जो कहा जा रहा था, रिफॉर्मेशन में जो चल रहा था, उससे भी। हमने उन अन्य लोगों के बारे में भी बात की है जिन्होंने रिफॉर्मेशन के दौरान उन्हें पहले ही प्रभावित किया है। ठीक है, बस दो और प्रभाव।

आखिरी से अगला, मुझे शायद इसे आखिरी में रखना चाहिए था ताकि यह दिखाया जा सके कि यह कितना महत्वपूर्ण था, लेकिन यह निश्चित रूप से बाइबल है। वह वचन का आदमी था। वह शास्त्र का आदमी था।

इसलिए, जॉन कैल्विन पर बाइबल का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कैल्विन बाइबल के व्याख्याकार हैं। जॉन कैल्विन के बारे में आप चाहे जो भी सोचें, वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने धर्मग्रंथ की व्याख्या की और इसी तरह की अन्य बातें कीं।

ठीक है, और आखिरी बात जो मैंने अभी-अभी अपने नोट्स और अन्य साहित्यिक स्रोतों में लिखी है। वह संत ऑगस्टीन से बहुत प्रभावित हैं, संत थॉमस एक्विनास से बहुत प्रभावित हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि वह लूथर से कितना प्रभावित थे।

लेकिन बहुत सारे साहित्यिक स्रोत उसके रास्ते में आते हैं, और ज़्यादातर ये धार्मिक स्रोत हैं जिन्हें वह पढ़ रहा है, लेकिन बहुत सारे साहित्यिक स्रोत उसके पढ़ने को आकार देने में मदद करते हैं। ठीक है, तो यह सिर्फ एक परिचय है। और फिर एक और बात है जो मुझे यह सब शुरू करने के लिए कहने की ज़रूरत है, और यही वह बात है जिसने उसे संस्थान लिखने के लिए प्रेरित किया।

मैं सिर्फ कुछ कारण बताना चाहता हूँ कि उन्होंने इंस्टिट्यूट क्यों लिखा क्योंकि यह उनके जीवन का काम बन गया। मेरा मतलब है, उन्होंने बहुत सी दूसरी चीज़ें लिखीं, लेकिन इंस्टिट्यूट ही वह

चीज़ है जिसमें हम उनके धर्मशास्त्र के लिए रुचि रखते हैं। तो, ठीक है, जाहिर है, पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रेरित किया, लेकिन यहाँ कुछ बुनियादी कारण दिए गए हैं।

ठीक है, और वह हमें यह सब इंस्टिट्यूट में बताता है, इसलिए आपको अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं है। वह इन सभी चीज़ों को बताने में बहुत अच्छा है। लेकिन इंस्टिट्यूट लिखने का सबसे बड़ा कारण यह था कि वह चाहता था कि इंस्टिट्यूट बाइबल को समझने की कुंजी बने।

जहाँ तक उनका सवाल है, संस्थान एक तरह से शास्त्रों की अच्छी और सही समझ के लिए एक व्याख्यात्मक कुंजी थे। इसलिए वह चाहते हैं कि लोग उनके संस्थानों को पढ़ें; वह चाहते हैं कि लोगों के पास यहाँ बाइबल हो और यहाँ संस्थान हों, संस्थानों को उनके लिए शास्त्रों को खोलने के तरीके के रूप में पढ़ें। इसलिए, यह बाइबल को समझने की कुंजी है।

यही एक कारण है कि वह यह सब क्यों लिख रहे हैं। हाँ। हाँ, एक तरह से, मेरा मतलब है, एक तरह से, यह दोनों है, और क्योंकि जब वह संस्थानों में होते हैं, जब वह बाइबिल का संदर्भ देते हैं और उस संदर्भ की व्याख्या करते हैं, तो वह चाहते हैं कि लोग पाठ में उस संदर्भ को भी पढ़ें।

तो शायद यह दोनों ही है, और पहले पूरे संस्थान को पढ़ने के बजाय, जो दो खंडों वाली चीज़ बन गई और फिर अपनी बाइबल पढ़ें। शायद यह दोनों ही है; शायद दोनों के साथ चलते रहें। क्योंकि, जैसा कि वह समझाते हैं, वह चाहते हैं कि आप उस पाठ को देखें।

यहाँ कुछ और भी है, पहला कारण, लोगों के लिए बाइबल खोलना। ठीक है। दूसरा कारण वह है जिसे उन्होंने कहा, मैं धर्म का सार प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं धर्म का सारांश दे रहा हूँ। मैं बता रहा हूँ कि धर्म में सबसे महत्वपूर्ण क्या है। अब धर्म से उनका मतलब ईसाई धर्म से था।

उनका मतलब सामान्य धर्म से नहीं था, बल्कि वे धर्म का सारांश प्रस्तुत कर रहे थे। वे इसे क्रम में रख रहे थे, आपको सारांश दे रहे थे। धर्म में सबसे महत्वपूर्ण क्या है? सबसे महत्वपूर्ण क्या है, ईसाई धर्म शब्द को प्रतिस्थापित करें; ईसाई धर्म में सबसे महत्वपूर्ण क्या है? खैर, उन्हें लगा कि यदि आप संस्थानों को पढ़ेंगे, तो आपको यह समझ में आ जाएगा।

ठीक है। नंबर तीन, संस्थान निश्चित रूप से एक तरह के हैं, यहाँ गॉर्डन कॉलेज में आप जिस भाषा के बारे में सुनते हैं, लेकिन एक तरह की ईसाई विश्व व्यवस्था, एक ईसाई दर्शन, आपको एक ईसाई के रूप में, दुनिया को कैसे देखना चाहिए और दुनिया में क्या है। तो, ईसाई विश्व व्यवस्था, दुनिया को ईसाई रूप से देखना, ईसाई चश्मे से दुनिया को समझना।

निश्चित रूप से, यह जॉन कैल्विन के लिए महत्वपूर्ण था। तो यह यहाँ एक ईसाई दर्शन स्थापित कर रहा है। ठीक है।

चौथी बात यह है कि यह एक क्षमाप्रार्थी कार्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है। कैल्विन बचाव कर रहे हैं, और वह एक अच्छे क्षमाप्रार्थी हैं।

वह ईसाई धर्म के रक्षक हैं, लेकिन वह ईसाई धर्म के रक्षक हैं जिसे सुधारवाद द्वारा समझा जाता है। इसलिए, वह ईसाई धर्म का बचाव करने के लिए सुधारवाद के सिद्धांतों, सुधारवाद के व्याख्याशास्त्र आदि का उपयोग कर रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक क्षमाप्रार्थी है।

यह काम क्षमाप्रार्थी है। यह आस्था की रक्षा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। तो, ठीक है।

और अंत में, वास्तव में एक सुसमाचार संबंधी प्रस्तावना है, पुस्तक लिखने का एक सुसमाचार संबंधी कारण है। कैल्विन हमें बताता है कि वह इस पुस्तक को लिखकर खोए हुए लोगों तक पहुँचना चाहता है। हालाँकि, अब यह थोड़ा बदल गया है।

तो चलिए मैं आपको बताता हूँ कि इसमें क्या बदलाव आया। उन्होंने 1536 में पहला संस्करण लिखा था। इंस्टिट्यूट का पहला संस्करण निश्चित रूप से उन लोगों के लिए लिखा गया था जिन्होंने कुछ नहीं सीखा था, उन लोगों के लिए जो बाइबल या चर्च के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते थे।

यह बहुत ही सुसमाचार-संबंधी था, जिसमें उन्हें मसीह में विश्वास दिलाने और धर्मग्रंथों में प्रवेश कराने, चर्च का सदस्य बनने आदि का प्रयास किया गया था। इसलिए संस्थानों का 1536 संस्करण सुसमाचार-संबंधी था, जो मसीह के संदेश के साथ लोगों तक पहुँचने के मूल तरीके से था। अब, बाद के संस्करण, जैसे-जैसे संस्थान अधिक से अधिक विकसित होते गए, बाद के संस्करण वास्तव में, या बाद की सामग्री वास्तव में चर्च के पादरियों और शिक्षकों के लिए लिखी गई थी ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके कि वे इस सामग्री को कैसे ले सकते हैं और अच्छे प्रचारक बन सकते हैं।

पादरी और शिक्षक कैसे कर सकते हैं... इसलिए, सामग्री बहुत अधिक जटिल हो जाती है। जैसे-जैसे वह संस्थानों के बारे में अधिक लिखता है, तर्क अधिक विस्तृत होता जाता है। इसलिए, वह जानता है कि संस्थानों के बाद के संस्करण उस व्यक्ति को पसंद नहीं आएंगे जो ईसाई धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानता है।

वह व्यक्ति संस्थाओं को नहीं समझ पाएगा। लेकिन पादरी और शिक्षक अपने पद को बेहतर तरीके से निभाने और अच्छे प्रचारक बनने के लिए सुसज्जित होंगे। इसलिए, सबसे पहले, लगभग अशिक्षित लोगों के लिए एक सुसमाचार प्रचार उद्देश्य है, लेकिन फिर जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, यह पादरी और शिक्षकों आदि के लिए होता है, और वे प्रचारक बन जाते हैं।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका एक सुसमाचार प्रचार उद्देश्य है। इसलिए, और हम सामान्य रूप से परिचय के संदर्भ में इस अंतिम बात पर भी ध्यान देना चाहते हैं, कि कैल्विन ने संस्थानों के अलावा भी बहुत कुछ लिखा है। इसलिए, कैल्विन ने धर्मोपदेश लिखे और प्रकाशित किए।

उन्होंने धर्मशिक्षाएँ प्रकाशित कीं। उन्होंने बाइबल पर टिप्पणियाँ प्रकाशित कीं। हम संस्थानों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, लेकिन हमें यह याद रखना होगा कि उनका लेखन बहुत बड़ा है।

तो, वह बहुत उल्लेखनीय था। ठीक है, हाँ, जेसी। जेसी, जब आपने कहा कि यह एक क्षमाप्रार्थी कार्य था, तो क्या यह किसी तरह का बचाव था? यह अक्सर रोमन कैथोलिक धर्म के खिलाफ बचाव करता है, है ना?

वह विश्वास करता था, और याद रखें कि उसने चर्च छोड़ दिया, या उसने चर्च नहीं छोड़ा, चर्च ने उसे छोड़ दिया। तो, यह वास्तव में सच्चा चर्च नहीं था। स्थानीय थे; हम इस बारे में बात करेंगे। वास्तव में, स्थानीय कैथोलिक चर्च थे जो उसे लगा कि सच्चे चर्च का हिस्सा थे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

लेकिन सच्चे चर्च में बने रहने के लिए उन्हें पदानुक्रमिक चर्च छोड़ना पड़ा। इसलिए, यह क्षमाप्रार्थी है और उनके अनुसार कैथोलिकों द्वारा आस्था के क्षरण के खिलाफ एक बचाव है, हाँ। तो, इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च के साथ मारपीट की।

इस बारे में कुछ और बात, जबकि हम यहाँ रुक गए हैं, वह यह है कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, उसे ऐसा करने के लिए क्या प्रेरित कर रहा है, और उसे ऐसा करने के लिए क्या प्रेरित कर रहा है। ठीक है, आइए यहाँ कुछ धर्मशास्त्र पर नज़र डालें क्योंकि वह चर्च से बात करने की कोशिश कर रहा है। और हम उसके मानव जाति के धर्मशास्त्र से शुरू करेंगे।

मैं उस भाषा का उपयोग कर रहा हूँ क्योंकि यह मानव जाति के धर्मशास्त्र के संस्थानों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है। और हम देखेंगे कि क्या हम इसका पता लगा सकते हैं। अब याद रखें, दूसरे सिद्धांत को देखें, मानव जाति का सिद्धांत; तीसरे सिद्धांत को देखें, ईश्वर का सिद्धांत।

याद रखें कि केल्विन ने खुद क्या कहा था: हमारे पास जो भी ज्ञान है, यानी सच्चा और सर्वोच्च ज्ञान, वह ईश्वर और खुद की समझ से शुरू होता है, लेकिन कौन सा पहले आता है, यह समझना मुश्किल है। ठीक है, तो हम उनके शब्दों पर विश्वास करते हैं, और हम उनके मानव जाति के सिद्धांत से शुरू करते हैं, और फिर हम ईश्वर के सिद्धांत पर जा रहे हैं। हम ईश्वर के सिद्धांत से शुरू कर सकते थे और फिर मानव जाति, मानव जाति के सिद्धांत पर जा सकते थे।

तो, हम सिर्फ केल्विन के शब्दों पर ही भरोसा कर रहे हैं; हम ऐसा करने में सिर्फ उनकी अपनी कार्यप्रणाली पर ही टिके हुए हैं। तो, चलिए हम खुद से शुरू करते हैं। ठीक है, सबसे पहले, मैं कुछ शब्द कहना चाहूँगा, और फिर हम उन्हें यहाँ पर रखेंगे।

ओह, मैंने वास्तव में यहाँ नाममात्रवाद लिखा था। क्या आपने नाममात्रवाद को ठीक से लिखा है? मैंने वास्तव में इसे यहाँ लिखा था। ठीक है, सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च मानव जाति को कैसे देखता था।

मानव जाति के बारे में उनकी समझ क्या थी? खैर, यह वाक्यांश, फेसरे में पाया जा सकता है कॉड इन सीस्ट। तो, और यहाँ हम बहुत ज़्यादा तरह के शब्द और वाक्यांश इस्तेमाल नहीं करेंगे, जैसे लैटिन या ऐसा कुछ, लेकिन हम जो इस्तेमाल करेंगे, आप उनसे परिचित हो जाएँगे। फेसरे कॉड इन सीस्ट.

शाब्दिक रूप से, फ़ेसरे क़ॉड इन सीस्ट का मतलब है वही करो जो तुम्हें करना है। और यह एक मध्ययुगीन प्रकार का नृविज्ञान था, कि मनुष्यों में अभी भी अच्छाई थी, इसलिए वे वही करने में सक्षम थे जो उन्हें करना था, जो सही काम उन्हें करना था। इसलिए, फ़ेसरे क़ॉड इन सीस्ट, जो करना है वो करो, वो सही काम करो जो तुम एक इंसान के तौर पर कर सकते हो। तुम्हारे अंदर अभी भी कुछ अच्छाई है, इसलिए वो करो।

ठीक है, यही धर्मशास्त्र है जिसके अनुसार कैल्विन को एक अच्छे रोमन कैथोलिक के रूप में समझा जाता था। यही वह धर्मशास्त्र है जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ होगा। कैल्विन आता है, और वह इससे इनकार करता है; वह कहता है कि यह सच नहीं है।

आप वह नहीं कर सकते जो आपको करना है। मनुष्य वह नहीं कर सकता जो उसे करना है। क्यों? मूल पाप के कारण।

इसलिए, कैल्विन के लिए, मूल पाप से उनका मतलब यह था कि हम सभी आदम के पाप में भागीदार हैं, और वह अपने संस्थानों में जिस शब्द का इस्तेमाल करते हैं वह है ईश्वर की छवि हमारे अंदर विकृत हो गई है। इसलिए, ईश्वर की छवि हमारे अंदर विकृत हो गई है। अब, अगर आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं और सड़क पर कुछ ऐसा है जिस पर कई बार गाड़ी चलाई गई है और वह वास्तव में विकृत है, तो आप लगभग नहीं बता सकते कि यह क्या है, आप जानते हैं।

खैर, यह मूल पाप के बारे में कैल्विन की समझ थी: हमारे अंदर ईश्वर की छवि विकृत है, ठीक है। और इसलिए, कैल्विन के लिए, हमारे आध्यात्मिक प्रकार जो आप करने में सक्षम हैं, आध्यात्मिक उपहार, वे कैल्विन के लिए पूरी तरह से खो गए हैं। जब कैल्विन के लिए आध्यात्मिक जीवन की बात आती है तो आपके पास जो करने के लिए है वह करने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि ईश्वर की छवि हमारे अंदर विकृत है।

हालांकि, जैसा कि कैल्विन हमें याद दिलाते हैं, सेंट ऑगस्टीन ने हमें याद दिलाया, और कैल्विन ने हमें याद दिलाया कि हमारे पास कुछ प्राकृतिक उपहार हैं। हमारे पास तर्क करने, सोचने और बोलने की कुछ क्षमता है, और, आप जानते हैं, वे प्राकृतिक उपहार हैं जो भ्रष्ट हैं लेकिन विकृत नहीं हैं। इसलिए भले ही हम गिर गए हों, भले ही हम भ्रष्ट हो गए हों, भले ही हम अब ईश्वर की छवि को धारण नहीं करते क्योंकि यह हमारे अंदर विकृत हो गई है, फिर भी हम दो और दो जोड़कर चार प्राप्त कर सकते हैं, या हम अभी भी अपनी ज़मीन पर खेती कर सकते हैं या हम अभी भी कभी-कभी अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार कर सकते हैं, आप जानते हैं, एक अच्छा काम कर सकते हैं।

ठीक है, लेकिन यह क्षमता कि आप जो करने के लिए हैं, उसे करने की क्षमता, आपके पास आध्यात्मिक अर्थ में वह करने की क्षमता नहीं है जो आप करने के लिए हैं। आप कुछ चीजें प्राकृतिक अर्थों में कर सकते हैं लेकिन वह भी भ्रष्ट है। इसलिए कैल्विन का भी इस बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण था कि आप प्राकृतिक अर्थों में क्या करने में सक्षम हैं, ठीक है? ठीक है,

कैल्विन के लिए, यहाँ से लोगों का मूल जीवन, उनके दैनिक जीवन में, मूल रूप से कैल्विन के लिए, यह है कि लोग अपना जीवन ईश्वर के विरुद्ध पूर्ण विद्रोह में जी रहे हैं।

यही बात लोगों के साथ हो रही है। वे वह नहीं कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिए, जो अच्छा है, क्योंकि वे ऐसा नहीं कर सकते। वे ऐसा करने में असमर्थ हैं। वे अपना जीवन ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह में जी रहे हैं, और इसलिए, उनके पास उन कार्यों के लिए कोई बहाना नहीं है।

ठीक है, और कैल्विन के लिए इन सबका मूल मूलतः अहंकार है। अहंकार ही वह है जो हमें खुद को जानने और ईश्वर को जानने से रोकता है जैसा कि हमें जानना चाहिए। और ताकि आप बात को समझ सकें, उन्होंने इसे बदबूदार अहंकार कहा।

तो अभिमान ही वह है जो हमें खुद को जानने और ईश्वर को जानने से रोकता है। इसलिए हम अपने जीवन में इस अभिमानी तरीके से ईश्वर के खिलाफ विद्रोह करते हैं, और यही है। ठीक है, अब, यहाँ जिम्मेदारी कहाँ आती है? क्या इस तरह से जीने वाले व्यक्ति के रूप में मेरी कोई जिम्मेदारी है जैसा कि कैल्विन ने अपने नृविज्ञान में बताया है? रोमन कैथोलिक की तरह नहीं, बल्कि नृविज्ञान जो मूल पाप है, मूल पाप से भरा हुआ है, बदबूदार अभिमान है, हम ईश्वर और हर चीज के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं।

क्या मेरी कोई जिम्मेदारी है? मैं रविवार की सुबह जेनेवा में कैल्विन का उपदेश सुनने जाता हूँ। मेरी क्या जिम्मेदारी है? मेरी पहली जिम्मेदारी है कि मैं खुद को परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करने वाले पापी के रूप में देखूँ और उन पापों को स्वीकार करूँ। सुसमाचार के श्रोता की पहली जिम्मेदारी है कि वह अपने पापों को स्वीकार करे और अपने पापों को स्वीकार करे।

क्योंकि अगर मैं खुद को पापी मानने और अपने पापों को स्वीकार करने की जिम्मेदारी नहीं लेता, तो मैं खुद को कभी नहीं जान पाऊंगा, और मैं कभी भगवान को नहीं जान पाऊंगा। इसलिए, कैल्विन के लिए, आप अपने कंधों पर यह जिम्मेदारी लेते हैं। आप अपने पापों को स्वीकार करते हैं, और आप पुष्टि करते हैं कि आप एक पापी हैं।

यह आत्म-ज्ञान की शुरुआत है। अब, यह मध्ययुगीन दुनिया में एक तरह से प्रति-सांस्कृतिक दिन था, लेकिन यह वास्तव में एक प्रति-सांस्कृतिक है। यह निश्चित रूप से हमारी दुनिया में एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है, है न? मेरा मतलब है, हमारी दुनिया में, क्या लोग खुद को सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण तरीके से सोचते हैं? सुबह सबसे पहले, वे खुद को भगवान के खिलाफ विद्रोह में पापी मानते हैं।

मुझे नहीं लगता कि हमारी दुनिया में लोग खुद को इस तरह से सोचते हैं। मुझे नहीं लगता कि वे खुद को ऐसे लोगों के रूप में सोचने की जिम्मेदारी ले रहे हैं जो ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं। इस पर कैल्विन का जवाब, ज़ाहिर है, था कि जब तक आप ऐसा नहीं करते, आप नहीं कर सकते; भगवान आपका भला करे; जब तक आप ऐसा नहीं करते, आप खुद को नहीं जान सकते।

एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो आपको कुछ वास्तविक आत्म-जागरूकता और आत्म-ज्ञान होना शुरू हो जाता है, और यह आपको ईश्वर के ज्ञान की ओर ले जाएगा। और फिर, जितना अधिक आप ईश्वर के बारे में जानेंगे, उतना ही अधिक आप अपने बारे में जानेंगे। इसलिए, केल्विन के लिए, यह बिल्कुल महत्वपूर्ण है।

तो यहीं से सब कुछ शुरू होता है। अब, जब बात मानव जाति के इस सिद्धांत की आती है, तो केल्विन का मानना था कि, क्या मुझे इस माइक के साथ कुछ करने की ज़रूरत है? नहीं, ठीक है, ठीक है। जब बात मानव जाति के सिद्धांत की आती है, तो केल्विन का मानना था कि हर कोई इस सिद्धांत को समझने में सक्षम है जब वे इसे मंच से उपदेश देते हैं।

ऐसा कोई नहीं है जो इसे न समझ सके। हर कोई इसे समझने में सक्षम है। इस संदेश को समझने के लिए आपको एक इंसान होने की ज़रूरत नहीं है, और आपको एक अच्छा ईसाई होने की भी ज़रूरत नहीं है।

यह हर किसी के द्वारा समझी जा सकने वाली चीज़ है। इसलिए, केल्विन के लिए इस बारे में कोई संदेह नहीं है। और जहाँ तक उनका सवाल है, हर किसी को इस बारे में स्पष्ट रूप से निर्देश दिए जाने की ज़रूरत है।

इसलिए, वह चाहते थे कि जिनेवा में लोग चर्च में जाएँ, सभी नागरिक चर्च में जाएँ, क्योंकि अगर वे खुद को ठीक से नहीं जानते तो वे अच्छे नागरिक कैसे हो सकते हैं? तो, ठीक है, तो यह पहली बात है, मानव जाति का सिद्धांत या मानव जाति का सिद्धांत, जैसा कि हम आज कहेंगे। मैं बस उस भाषा का उपयोग कर रहा हूँ जिसका संस्थानों में अनुवाद किया गया था। ठीक है।

ठीक है, कुल भ्रष्टा, मानव जाति का सिद्धांत, हाँ कहने के लिए तथ्य की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हम पूरी तरह से भ्रष्ट हैं। हमारे अंदर ईश्वर की छवि विकृत है। हम बदबूदार अभिमान से भरे हुए हैं।

हम ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं। और लड़के, यह कठिन है, यह कठिन है, आप जानते हैं, प्रतिसंस्कृति संदेश। उस संदेश के बारे में कुछ? मैं आपसे केल्विन से सहमत होने के लिए नहीं कह रहा हूँ।

मैं आपसे कह रहा हूँ कि आप अपने धर्मशास्त्र के बारे में सोचें कि केल्विन हमें क्या सिखा रहे हैं और कहें कि यह मेरे विचारों से कैसे मेल खाता है? क्या मैं सहमत हूँ? क्या मैं असहमत हूँ? क्या यह मेरे लिए मददगार है? क्या इस पर केल्विन के साथ मेरी कोई चर्चा हो सकती है? आप जानते हैं, तो यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। तो, ठीक है। क्या हम इससे सहमत हैं? ठीक है।

ईश्वर का सिद्धांत सी है। हमारे पास जो भी ज्ञान है, वह खुद के और ईश्वर के ज्ञान से शुरू होता है। ये दोनों चीज़ें आपस में जुड़ी हुई हैं। ठीक है।

ठीक है। अब, परमेश्वर के सिद्धांत के बारे में पहली बात यह है कि उसे प्रभुतापूर्ण शब्द पसंद आया। परमेश्वर ब्रह्मांड का प्रभुतापूर्ण प्रभु है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन वह ब्रह्मांड का संप्रभु भगवान नहीं है जैसा कि नाममात्रवादियों ने सिखाया है। वह ब्रह्मांड का संप्रभु भगवान है, और हम उसकी संप्रभुता को समझते हैं।

हम उसकी संप्रभुता को समझते हैं क्योंकि वह संप्रभुता प्रेम में प्रदर्शित होती है। यह न्याय में प्रदर्शित होती है। यह हमारे प्रति उसकी वफ़ादारी और हमारे प्रति उसके अनुग्रह में प्रदर्शित होती है।

तो यह कोई पूर्ण संप्रभुता नहीं है कि वह जो चाहे करे, और हम कभी नहीं समझ पाएंगे कि ऐसा क्यों है। यह कुछ नाममात्रवादियों ने सिखाया था। नहीं, ऐसा नहीं है।

यह एक संप्रभुता है जो इन तरह के तरीकों से हमारे साथ खूबसूरती से जुड़ी हुई है। इसलिए यह महत्वपूर्ण था। अब, जब आप संस्थानों को पढ़ते हैं तो यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि हमें ईश्वर को कैसे जवाब देना चाहिए। यहाँ उन शब्दों के प्रकार दिए गए हैं जिन्हें आप उस ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया में पढ़ते हैं।

हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए। हमें उस परमेश्वर का आदर करना चाहिए। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

इसलिए, यह सिर्फ इसलिए नहीं था क्योंकि वह संप्रभु है और इसलिए क्योंकि वह इन अद्भुत तरीकों से अपनी संप्रभुता प्रदर्शित करता है। जब आप संस्थाओं को पढ़ते हैं तो इस ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के शब्दों पर ध्यान दें। सम्मान, श्रद्धा, भय, प्रेम, भरोसा।

इसी तरह हमें आभारी होना चाहिए कि हम इस ईश्वर की संतान हैं। इसलिए, इस पर हमारी प्रतिक्रिया बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, अब ईश्वर के बारे में एक और बात, और वह यह है कि ईश्वर की महिमा को कभी भी किसी भी तरह से कम नहीं किया जाना चाहिए।

आपको हमेशा परमेश्वर की महिमा पर ज़ोर देना चाहिए। आपको कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए या कुछ भी नहीं कहना चाहिए जो परमेश्वर की महिमा को कमज़ोर या चोट पहुँचाए या नकारे। इसलिए, बस भजन संहिता पढ़ें और परमेश्वर की महिमा के बारे में पढ़ें।

और इसलिए, उन्होंने परमेश्वर की महिमा के बारे में बहुत कुछ कहा। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर की स्वतंत्रता कभी भी बाधित नहीं होती। परमेश्वर स्वतंत्र है क्योंकि वह परमेश्वर है।

इसलिए, आप कभी भी परमेश्वर की स्वतंत्रता को कम नहीं कर सकते, उसके खिलाफ बात नहीं कर सकते, या उस पर संदेह नहीं कर सकते। वास्तव में, जैसा कि हम बाद में उनके धर्मशास्त्र के साथ देखेंगे, परमेश्वर उन लोगों को चुनने के लिए स्वतंत्र है जिन्हें बचाया जाना है। और वह उन लोगों को चुनने के लिए भी स्वतंत्र है जिन्हें शापित किया जाना है।

यह ईश्वर की स्वतंत्रता है। आप ईश्वर की उस स्वतंत्रता को कभी भी बाधित नहीं कर सकते। आप ईश्वर की उस स्वतंत्रता का कभी भी अवमूल्यन नहीं कर सकते।

वह पूरी तरह से स्वतंत्र है क्योंकि वह ईश्वर है। हम उस स्वतंत्रता को शायद न समझ पाएं, लेकिन फिर भी, कैल्विन के लिए, वह स्वतंत्र है। तो ठीक है, ईश्वर के मामले में हम एक और बात पर ध्यान देना चाहते हैं।

मेरा मतलब है, जाहिर है, हम कैल्विन के साथ पाठ्यक्रम के बाकी हिस्सों में ईश्वर के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन क्योंकि यह एक तरह का सर्वेक्षण पाठ्यक्रम है, इसलिए हम इस विषय पर आगे बढ़ते हैं। लेकिन मुझे ईश्वर को निर्माता और उद्धारक के रूप में चित्रित करना बहुत पसंद है। ईश्वर निर्माता और उद्धारक है।

और परमेश्वर को पूरी तरह से समझने के लिए, हम उसे केवल मसीह में ही समझ सकते हैं, बेशक। मसीह परमेश्वर का पूर्ण प्रकटीकरण है। यह मसीह ही है जो हमें सृष्टिकर्ता और उद्धारक के रूप में परमेश्वर की प्रकृति को समझने में मदद करता है क्योंकि मसीह सृष्टिकर्ता और उद्धारक है।

इसलिए, ईश्वर के बारे में उनकी समझ ईश्वर के बारे में मसीह-रहित समझ नहीं है। यह एक यूनिटेरियन नहीं है। आइए सर्वेटस पर वापस चलते हैं।

सर्वेटस को ईश्वर के बारे में एकतावादी समझ थी। माइकल सर्वेटस को याद करें, जिन्हें जिनेवा में सूली पर जला दिया गया था? ईश्वर के बारे में उनकी एकतावादी समझ थी। ईश्वर यहीं पर है।

हम यहाँ नीचे हैं। बीच में एक अंतर है। यह बात कैल्विन के लिए सच नहीं थी, बेशक, क्योंकि ईश्वर के बारे में हमारी सबसे अच्छी समझ तब होती है जब हम मसीह के चेहरे को देखते हैं।

और मसीह सृष्टिकर्ता और उद्धारक है, और यही परमेश्वर है। इसलिए, यदि आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कौन है, तो मसीह को देखें। इसी तरह हम परमेश्वर को सबसे अच्छी तरह समझ सकते हैं।

ठीक है। मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ। तो, हम भगवान से शुरू करते हैं।

मुझे खेद है। हम मानवजाति से शुरू करते हैं, और फिर हमारे पास जो भी ज्ञान है वह ईश्वर और स्वयं के ज्ञान से शुरू होता है। और हम ईश्वर के पास जाते हैं।

और जितना ज़्यादा हम ईश्वर के बारे में समझेंगे, उतना ज़्यादा हम अपने बारे में समझेंगे। और जितना ज़्यादा हम अपने बारे में समझेंगे, उतना ज़्यादा हम ईश्वर के बारे में समझेंगे। यह एक चक्र में घूमता रहता है।

तो, क्या आपके पास इस अद्भुत मंडली के बारे में कोई सवाल है जिसमें हम कैल्विन के धर्मशास्त्र की शुरुआत कर रहे हैं? यह एक कथन और निर्देश है। जब वह उपदेश दे रहा है, तो

वह लोगों से कह रहा है कि आपको अपने कार्यों से कभी भी प्रभावित नहीं होना चाहिए। आपको अपने कार्यों, अपने शब्दों, अपने कर्मों से कभी भी परमेश्वर की महिमा को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि आप परमेश्वर की महिमा की उपस्थिति में खड़े हैं, और आपको कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो किसी भी तरह से उससे अलग हो। तो यह कैल्विन के लिए एक तथ्य है, लेकिन यह एक चेतावनी भी है। हाँ।

हाँ, रूथ? जब आप मसीह के दूसरे अर्थ शब्द का प्रयोग करते हैं, तो क्या इसका मतलब परमेश्वर से है? मसीह परमेश्वर का पूर्ण प्रकटीकरण है। हाँ। मसीह, हम परमेश्वर को समझते हैं।

हम परमेश्वर को कैसे समझते हैं? हम मसीह के चेहरे को देखकर उसे पूरी तरह से समझते हैं। तो, मसीह वह शब्द है जो देहधारी हुआ और हमारे बीच में रहा। यह परमेश्वर का पूर्ण और संपूर्ण प्रकाशन है।

हाँ। यहाँ मानवजाति और ईश्वर के बारे में कुछ और है, आप जानते हैं, यह यहाँ एक चक्राकार प्रकार की चीज़ है। तो, हम सब इसके साथ तैयार हैं? ठीक है।

हाँ। ठीक है। चलो चर्च के सिद्धांत पर चलते हैं, आपकी रूपरेखा में नंबर चार, लेकिन यह तीसरे प्रकार का सिद्धांत है, चर्च का सिद्धांत।

ठीक है। बेटा, यहाँ बहुत कुछ है। चर्च का सिद्धांत।

ठीक है। ठीक है। सबसे पहले, कैल्विन के लिए, चर्च कभी भी पूरी तरह से गिर नहीं जाता है।

चर्च कभी भी पूरी तरह से नहीं गिरा है। चर्च कभी भी पूरी तरह से परमेश्वर से दूर नहीं हुआ है। तो, आप देखिए, चर्च और कैल्विन ने जो किया वह दृश्यमान चर्च और अदृश्य चर्च के बीच अंतर करना था।

तो, चलिए इस अंतर को समझते हैं। एक दृश्य चर्च है और एक अदृश्य चर्च है। ठीक है।

तो, दृश्यमान चर्च क्या है? दृश्यमान चर्च वह चर्च है जिसे आप अपने चारों ओर देखते हैं। यह वह मण्डली है जो रविवार की सुबह मिलती है। यह कोने पर स्थित चर्च है।

यह पादरी, पुजारी है, जो यूचरिस्ट या प्रभु के भोज का उपदेश देता है जिसे आप सुनते हैं। लेकिन दृश्यमान चर्च वह चर्च है जिसे आप देखते हैं, वह चर्च जिसे आप अपनी इंद्रियों से देखते हैं। वह दृश्यमान चर्च है।

ठीक है। अब, जॉन कैल्विन के लिए, यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि वह दृश्यमान चर्च दोषपूर्ण है, और हम यह अच्छी तरह से जानते हैं, है न? वह दृश्यमान चर्च एक दोषपूर्ण मानव संगठन है, और वहाँ बुरे पुजारी हैं, और बुरे मंत्री हैं, और बुरे आम लोग हैं, और कभी-कभी जब

कोई व्यक्ति ईसाई बन जाता है, और आप उसे चर्च में लाते हैं, तो आप जो करना चाहते हैं वह है उसे चर्च के कुछ संतों से दूर रखना, क्योंकि चर्च के कुछ संत सबसे भयानक लोग हैं जिनसे आप कभी मिल सकते हैं। चर्च के कुछ संत ऐसे लोग हैं जिनके साथ आप उन्हें घुलना-मिलना नहीं चाहते।

चर्च के बाहर के कुछ लोग चर्च के कुछ संतों से कहीं ज़्यादा अच्छे हैं। इसलिए, दिखने वाला चर्च दोषपूर्ण है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

उन्होंने कहा, "यह एक दोषपूर्ण चर्च है। यह एक आदर्श चर्च नहीं है। हम इसे स्वीकार करते हैं।"

ठीक है, लेकिन अदृश्य चर्च, फिर भी, शुद्ध चर्च है। अदृश्य चर्च मसीह का शरीर है, मसीह का धार्मिक शरीर। यह शुद्ध है।

यह पृथ्वी पर परमेश्वर का शुद्ध शरीर है। यह अदृश्य चर्च है, ठीक है? और दृश्य चर्च में अदृश्य चर्च समाहित है। तो, दृश्य चर्च के भीतर, आपको शुद्ध चर्च मिला है।

यह वहाँ है। इसलिए, मैं हमेशा छात्रों से कहता हूँ, और मैं आपसे भी कहूँगा क्योंकि मैं आपकी धार्मिक पृष्ठभूमि नहीं जानता। मैं आपकी चर्च पृष्ठभूमि नहीं जानता।

मुझे नहीं पता कि आप सभी कहाँ से आ रहे हैं। मुझे किसी दिन यह जानना अच्छा लगेगा। हो सकता है कि हमारी चर्चाओं में, आप किसी दिन इसे साझा करने के लिए तैयार हों।

लेकिन जैसे ही चर्च में कोई समस्या आती है, कोई बुरा पादरी या कुछ आम लोग समस्याएँ पैदा करते हैं या फिर चर्च में विभाजन पैदा करते हैं या ऐसा कुछ होता है, लोग चर्च छोड़ने के लिए बहुत जल्दी तैयार हो जाते हैं। इसलिए, लोग कई तरह के कारणों से चर्च छोड़ते हैं, और वे निश्चित रूप से चर्च छोड़ते हैं। और उनमें से कुछ के पीछे वैध कारण भी होते हैं।

मैं लोगों से यही कहता हूँ कि अपने स्थानीय चर्च या अपने स्थानीय संप्रदाय को छोड़ने से पहले अच्छी तरह सोच लें। हो सकता है कि आप जो हो रहा है उससे परेशान हो रहे हों, या हो सकता है कि चर्च में ऐसी चीज़ें चल रही हों जो वाकई बुरी खबर हों। लेकिन हर चर्च में एक अदृश्य चर्च होता है।

वहाँ पवित्र चर्च है। हर दृश्यमान चर्च में एक अदृश्य चर्च होता है। इसलिए, वहाँ पवित्रता है।

कभी-कभी, मुझे लगता है कि हमें चर्च में समान विचारधारा वाले विश्वासियों को खोजने की ज़रूरत है जो उस स्थानीय चर्च में सुधार लाना चाहते हैं या उस संप्रदाय में सुधार करना चाहते हैं, बजाय इसके कि वे इसे अपने आप छोड़ दें। लेकिन उन्होंने इसे महान बनाया; इसे ऑगस्टीन ने बनाया था, और वे इसे उठा रहे हैं और इसे अपने समय और अपने युग के लिए बना रहे हैं। मुझे लगता है कि हमें दृश्यमान चर्च बनाम अदृश्य चर्च के बारे में अधिक सोचने की ज़रूरत है।

अदृश्य चर्च ही शुद्ध चर्च है, इसमें कोई संदेह नहीं है। और हम दृश्यमान चर्च से बहुत परेशान हो जाते हैं, है न? मैं परेशान हो जाता हूँ। मैं निश्चित रूप से दृश्यमान चर्च से परेशान हो जाता हूँ क्योंकि दृश्यमान चर्च में बहुत अधिक विद्वेष, कड़वाहट, घृणा और गंदी चीजें चल रही हैं।

लेकिन अदृश्य चर्च हमेशा मौजूद रहता है। इसलिए हम इसे याद रखना चाहते हैं। शायद कैल्विन यहाँ हमारी मदद कर सकता है।

तो ठीक है। यह चर्च के बारे में एक बात है। अगर कोई इस बारे में बात करना चाहता है, तो आपका स्वागत है।

मुझे यह जानना अच्छा लगेगा कि आपके संप्रदाय क्या हैं और आपका चर्च जीवन कैसा है। शायद कोर्स के अंत में, आप इसे मेरे साथ साझा करने के लिए तैयार होंगे। मुझे यह जानकर बहुत खुशी होगी कि हम कितने अलग-अलग हैं।

ठीक है। अब, कैल्विन ने कहा, यदि आप अपने जीवन में इसे खोजने का प्रयास करने जा रहे हैं, तो आपको सच्चा चर्च खोजने का प्रयास करना होगा। आप उस चर्च को खोजने जा रहे हैं जिसे आप न्यू टेस्टामेंट चर्च, सच्चा चर्च मानते हैं।

सच्चे चर्च के लक्षण क्या हैं? कैल्विन ने कहा कि सच्चे चर्च के दो लक्षण हैं। सच्चे चर्च, न्यू टेस्टामेंट चर्च में ये दो लक्षण होने चाहिए। अगर ऐसा नहीं है, तो यह सच्चा चर्च नहीं है।

हो सकता है कि इसके भीतर अभी भी कुछ पवित्रता हो और ऐसा ही कुछ हो, लेकिन अगर ऐसा नहीं है, तो वह दृश्यता बहुत स्पष्ट है। तो, ठीक है। अब, ये दो चिह्न, यहाँ कैल्विन की भाषा से ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं है।

तो, मैं आपको ये दो निशान देने जा रहा हूँ। मैं वास्तव में उन्हें आपके सामने उद्धृत करने जा रहा हूँ क्योंकि कैल्विन इस बारे में बहुत सटीक है। और हर एक शब्द, यह एक वकील की तरह है।

आप पूछेंगे, अच्छा, उसका क्या मतलब है? लेकिन खैर, ठीक है। तो, नंबर एक, परमेश्वर का वचन विशुद्ध रूप से प्रचारित किया जाता है। परमेश्वर का वचन विशुद्ध रूप से सच्चे चर्च में प्रचारित किया जाता है।

वह यह नहीं कहता कि परमेश्वर का वचन प्रचार किया जाता है। वह कहता है कि परमेश्वर का वचन विशुद्ध रूप से प्रचार किया जाता है, सही ढंग से प्रचार किया जाता है, सत्य के वचन को सही ढंग से विभाजित किया जाता है, आप जानते हैं। यह पहली विशेषता है।

अगर आपको लगता है कि परमेश्वर का वचन पूरी तरह से प्रचारित किया जा रहा है, तो आप जानते हैं कि आपके पास अदृश्य चर्च है, आप जानते हैं, सच्चा चर्च। ठीक है। तो, क्या हम वहाँ ठीक हैं? परमेश्वर का वचन पूरी तरह से प्रचारित किया जाता है।

ठीक है। दूसरा, संस्कार, वैध रूप से प्रशासित किए जाते हैं। संस्कार, जिसका अर्थ उन्होंने प्रभु के भोज में बपतिस्मा से लिया था, और हम, मुझे लगता है कि अंत में, संस्कारों तक पहुँचते हैं, क्या हम संस्कारों तक नहीं पहुँचते? शायद मुझे इसका उल्लेख करना चाहिए।

खैर, हम देखेंगे। मुझे लगता है कि हम बाद में संस्कारों पर पहुँचेंगे। लेकिन वैसे भी, संस्कार वैध रूप से प्रशासित किए जाते हैं।

ठीक है। तो, उन्हें उसी तरह प्रशासित किया जाना चाहिए जैसे कि वे मसीह द्वारा स्थापित किए गए थे। और निश्चित रूप से, केल्विन के लिए, वैध रूप से प्रशासित होने का मतलब है कि उन्हें एक नियुक्त पादरी द्वारा प्रशासित किया जाना चाहिए।

आप आम लोगों को संस्कार देने और लोगों को बपतिस्मा देने के लिए नहीं कह सकते। और वैसे, वह सिर्फ प्रभु के भोज में बपतिस्मा देने में विश्वास करता था। इसलिए, आप ऐसा नहीं कर सकते।

तो, ठीक है। तो, यही चर्च की असली पहचान है। परमेश्वर का वचन विशुद्ध रूप से प्रचारित किया जाता है।

संस्कार वैध रूप से प्रशासित किए जाते हैं। अब, वकील है। वकील है।

हर शब्द मायने रखता है। वह हर शब्द का मतलब समझता है। वह हर शब्द के बारे में बात करता है, आप जानते हैं।

तो, वकील वहाँ से आ रहा है। तो, ठीक है। ठीक है।

हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं कि क्या आपको चर्च छोड़ देना चाहिए। मुझे नहीं पता कि हमें और कुछ कहने की ज़रूरत है या नहीं। क्या आपको चर्च छोड़ देना चाहिए? खैर, शायद मुझे कुछ बातें कहनी चाहिए।

क्या आपको चर्च छोड़ देना चाहिए? मैंने पहले भी इस बारे में बात की है, लेकिन ठीक है। सबसे पहले, सिर्फ भगवान ही जानता है कि चुने हुए लोग कौन हैं। आप नहीं जानते कि चुने हुए लोग कौन हैं।

इसलिए, यदि आप चर्च छोड़ने के बारे में सोच रहे हैं, तो आप चर्च छोड़ने के बारे में सोच सकते हैं क्योंकि यह विधर्मी और इसी तरह की अन्य चीजें बन सकती हैं। अभी भी ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार के लिए चुना है। उस चर्च में अभी भी कुछ चुने हुए लोग हो सकते हैं।

तो, यह एक बात है कि आपको चर्च छोड़ देना चाहिए या नहीं। सिर्फ भगवान ही जानता है कि चुने हुए लोग कौन हैं। मैं दो और तीन का जिक्र करूँगा, और फिर मैं आपको विराम दूँगा।

लेकिन मैं दो और तीन का जिक्र करना चाहूँगा। यह बहुत दिलचस्प है। केल्विन कैथोलिक विरोधी नहीं थे।

केल्विन लूथर की तरह पदानुक्रमित कैथोलिक चर्च से असहमत थे। लेकिन केल्विन का मानना था कि एक स्थानीय कैथोलिक चर्च अदृश्य चर्च का हिस्सा हो सकता है। उस स्थानीय कैथोलिक चर्च में वास्तविक पवित्रता हो सकती है।

उस वचन का सही ढंग से प्रचार किया जा सकता है, और संस्कारों को वैध रूप से प्रशासित किया जा सकता है। यह केवल ईश्वर ही जानता है। लेकिन लूथर की तरह केल्विन ने भी कैथोलिक चर्च की निंदा नहीं की।

लूथर की तरह केल्विन ने भी कैथोलिक चर्च के पदानुक्रम और संरचना की निंदा की। लेकिन सड़क के नीचे स्थित स्थानीय कैथोलिक चर्च, न तो केल्विन और न ही लूथर ने कभी इसकी निंदा की। उनका मानना था कि यह संभव है कि चर्च अदृश्य चर्च का हिस्सा हो।

इसलिए, केल्विन और लूथर आज के अमेरिकी कट्टरपंथियों की तरह नहीं थे। आज भी अमेरिकी कट्टरपंथी हैं जो इतने कैथोलिक विरोधी हैं कि कोई भी अच्छा कैथोलिक नहीं है। कोई भी अच्छा कैथोलिक नहीं है और कोई भी अच्छा कैथोलिक चर्च नहीं है।

आप केल्विन और लूथर के साथ ऐसा दावा नहीं कर सकते। कई चर्चों में, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और पूर्वी रूढ़िवादी, अदृश्य चर्च है, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि यदि आप चर्च छोड़ देते हैं, तो केल्विन हमेशा यहाँ एक चेतावनी देते हैं, और वह यह है कि, याद रखें, चर्च के बाहर, कोई उद्धार नहीं है।

चर्च के बाहर कोई उद्धार नहीं है। आपको चर्च में रहना होगा ताकि आप जान सकें, उद्धार का संदेश सुन सकें और मसीह में विश्वास कर सकें और फिर उस जीवन में परिपक्व हो सकें। इसलिए, चर्च के बाहर, कोई उद्धार नहीं है।

इसलिए, केल्विन इस बारे में बहुत सख्त थे। आप चर्च के बाहर मुक्ति नहीं पा सकते। मुझे नहीं पता।

क्या मुझे यहाँ उपदेश देना चाहिए? हाँ, मैं उपदेश दूँगा। ठीक है, मैं अब उपदेश देने जा रहा हूँ। मैं अब और नहीं पढ़ाऊँगा।

मैं उपदेश दे रहा हूँ। कभी-कभी एक महीन रेखा होती है। इसलिए, गॉर्डन कॉलेज में, क्योंकि आप सप्ताह में दो या तीन बार चैपल जाते हैं, आपको रविवार की सुबह भी चर्च जाना पड़ता है।

आपको विश्वासियों के एक ऐसे समुदाय की आवश्यकता है जिसके साथ आप पूजा करने, प्रभु भोज लेने, बपतिस्मा लेने और प्रभु भोज ग्रहण करने तथा परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनने में सहज हों। आपको इसकी आवश्यकता है क्योंकि वह समुदाय आपके जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जिस चीज़ से मैं अक्सर सबसे ज़्यादा डरता हूँ, मुझे कहना होगा, क्योंकि यह टेप किया जा रहा है, मुझे लगता है कि यह वही है।

गॉर्डन कॉलेज के छात्रों के बारे में मुझे सबसे ज़्यादा डर इस बात का होता है कि जब आप स्नातक होंगे, तो आपको आराधना करने के लिए विश्वासियों का समुदाय नहीं मिलेगा क्योंकि आप, आप जानते हैं, पहले वर्ष या उसके आस-पास, दूसरे वर्ष, तीसरे वर्ष में होंगे, और जितना अधिक आप विश्वासियों के समुदाय से दूर होते जाएँगे, उतना ही आप चर्च से बाहर होते जाएँगे, जिसके बारे में कैल्विन ने कहा कि चर्च के बाहर कोई उद्धार नहीं है, लेकिन जितना अधिक आप मसीह के शरीर में विश्वासियों के समुदाय से बाहर होंगे, उतना ही ऐसा करना आसान होगा। और फिर अंत में, यह आप और यीशु की तरह है और आप बस अपनी बाइबल पढ़ते हैं और इसी तरह। कैल्विन इसे बिल्कुल भी नहीं मानेंगे।

आपको मसीह के शरीर की आवश्यकता है। आपको विश्वासियों के समुदाय की आवश्यकता है ताकि आप जान सकें कि आप क्या हैं और ईश्वर क्या है, आप जानते हैं। इसलिए, मैं आपसे विनती कर रहा हूँ कि जब आप गॉर्डन कॉलेज से निकलें, जहाँ भी आप बसें, विश्वासियों का एक समुदाय खोजें, एक स्थानीय चर्च खोजें, आप जानते हैं।

कृपया ऐसा करें। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। तो, ठीक है, अब मैं उपदेश दे रहा हूँ, और मैंने आपको पाँच सेकंड नहीं दिए, इसलिए मैं अब यह कर रहा हूँ।

तो बस स्ट्रेच करें, आराम करें, जो भी हो, पाँच सेकंड। आपको ब्रेक मिलना चाहिए।

आज सोमवार की सुबह है। हालाँकि, मुझे आपके लिए बहुत दुख नहीं है, क्योंकि बुधवार और शुक्रवार, बुधवार और शुक्रवार, आप आराम नहीं करेंगे, बल्कि लाइब्रेरी में अध्ययन करेंगे और अपनी किताबें और सब कुछ पढ़ेंगे। इसलिए मैं बुधवार और शुक्रवार को आपके बारे में सोचूंगा।

क्या यहाँ वर्जीनिया से कोई है? मैं विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया में रहूँगा। वहाँ का इलाका बहुत खूबसूरत है, इसलिए रिट्रीट विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया में है। बहुत बढ़िया है, है न? यह इसके लिए एक अच्छी जगह है।

ठीक है, आपने अपना ब्रेक ले लिया? ठीक है, हम यहाँ थोड़ा आगे बढ़ेंगे, और फिर एक अच्छा सप्ताह बिताएँगे, और फिर हम अगले सोमवार को आपसे मिलेंगे। ठीक है, नंबर, ओह, हम अभी भी चर्च में हैं। हमने अभी तक चर्च नहीं छोड़ा है, कोई मज़ाक नहीं है, लेकिन हमने अभी तक चर्च नहीं छोड़ा है।

ठीक है, क्योंकि हमें चर्च में मंत्रालय के बारे में बात करने की ज़रूरत है, और मेरे पास शायद ऐसा करने के लिए समय होगा, और फिर हमें संस्कारों के बारे में बात करने की ज़रूरत है, और मेरे पास ऐसा करने के लिए समय नहीं होगा, लेकिन चर्च में मंत्रालय, इसलिए। ठीक है, चर्च में मंत्रालय, दो शब्द हैं जिन्हें समझना वास्तव में महत्वपूर्ण है, कैल्विन, जब चर्च में मंत्रालय की बात आती है। ठीक है, पहला शब्द है सभी विश्वासियों का पुजारी, सभी विश्वासियों का पुजारी।

अब, सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का अर्थ है कि सभी विश्वासी एक दूसरे के लिए पुरोहित के रूप में सेवा कर सकते हैं। मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकता हूँ। मैं आपके सामने अपने पापों को स्वीकार कर सकता हूँ।

मैं आपको सलाह दे सकता हूँ। सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का अर्थ है कि हम एक दूसरे के लिए पुजारी हो सकते हैं। ठीक है, अब दूसरा शब्द है वोकेशन या कॉलिंग।

हर ईसाई का एक व्यवसाय होता है। हर ईसाई का एक बुलावा होता है। वर्तमान में आपका बुलावा यह है कि आपको विद्यार्थी बनने के लिए बुलाया गया है, और आप अभी उस बुलावे को पूरा कर रहे हैं, लेकिन हम दोनों को भ्रमित नहीं करना चाहते क्योंकि सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व का मतलब यह नहीं था कि आप उपदेश दे सकते हैं या आप संस्कार दे सकते हैं।

उपदेश देना, संस्कार देना और बाइबल की व्याख्या करना, एक विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित था। यह मंत्रालय का व्यवसाय है, इसलिए कभी-कभी प्रोटेस्टेंट महसूस करते हैं कि सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व की इस धारणा का अर्थ है, ओह, मैं उपदेश दे सकता हूँ, या मैं संस्कार दे सकता हूँ या ऐसा कुछ, कैल्विन के लिए नहीं।

इसका मतलब यह नहीं है कि, कैल्विन के लिए, उपदेश देना और संस्कार देना किसी विशेष सेवकाई व्यवसाय से जुड़ा हुआ था। अब, मंत्री या पादरी का वह व्यवसाय अन्य व्यवसायों से बेहतर नहीं था, शायद शिक्षक होने या घर की देखभाल करने या कुछ और करने से। यह कोई बेहतर व्यवसाय नहीं था।

लूथर और कैल्विन के लिए कोई पदानुक्रम नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह था कि कुछ जिम्मेदारियाँ थीं जो केवल उस व्यवसाय में व्यक्ति ही कर सकता था। इसलिए एक आम व्यक्ति एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकता है, लेकिन एक आम व्यक्ति उपदेश नहीं दे सकता या संस्कार नहीं दे सकता। इसलिए ये दो शब्द वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हैं।

ठीक है। मंत्रालय के संदर्भ में हमें एक और बात पर ध्यान देना चाहिए कि, जहाँ तक उसका संबंध है, मंत्री, स्थानीय चर्च में स्थानीय मंत्री के पास बहुत अधिक अधिकार है, और इसमें इस तरह की चीजें शामिल हैं। उपदेश में शिक्षण, संस्कार देना, प्रशासन, आम लोगों को अनुशासित करना, चर्च के लोगों को अनुशासित करना और क्षमा का मंत्रालय शामिल है।

इसलिए, जब लोग अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो महान, महान सेवा का एक हिस्सा और मंत्री के पास जो सेवा का अधिकार है, वह उन्हें याद दिलाना है कि उन्हें भगवान ने क्षमा कर दिया है। ठीक है। अब, याद कीजिए कि हमने कहा, सुधार के लिए सबसे महान शब्दों में से एक क्या था? यह शब्द था आश्वासन, आश्वासन।

मंत्री के अधिकार का एक हिस्सा लोगों को यह भरोसा दिलाना है कि वे ईश्वर की संतान हैं। और हां, ऐसा करना एक बड़ी जिम्मेदारी है। इसलिए, मंत्रालय के काम में बहुत सारी अद्भुत चीजें शामिल थीं।

अब, सामान्य तौर पर, कैल्विन ने कहा कि दो मंत्री पद हैं, और मैं बस यही कहूंगा कि हमें जाना होगा। पहला पद पादरी का पद है। ठीक है।

दूसरा पद डीकन का पद है। पादरी वह व्यक्ति होता था जो उपदेश देता था और शिक्षा देता था। डीकन वह व्यक्ति होता था जो चर्च में सेवकों का काम करता था।

आप में से कुछ लोग ऐसे चर्चों से आते हैं जहाँ पादरी और डीकन होते हैं, या शायद एल्डर और डीकन, या शायद प्रेस्बिटर और डीकन। तो, आप उस भाषा से बहुत परिचित होंगे। तो ये दो पद थे क्योंकि कैल्विन के लिए सिर्फ़ यही दो पद थे।

क्यों? क्यों वे केवल दो पद ही थे जिन्हें वे स्वीकार करेंगे? क्यों? अन्य क्यों नहीं? क्योंकि वे दो ही हैं, जिनके बारे में उन्होंने बाइबल में पढ़ा था। इसलिए, उन्हें लगा कि ये दो ही ऐसे हैं जिनके पास बाइबल का अधिकार है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, सत्र 5 में जॉन कैल्विन पर बता रहे हैं।